Let's nurture the green era..™

तुलसी पत्र

वर्ष १ / अंक १ | ऑगस्ट २००९

सुविचार दूब की तरह सरल बनो, जब घास-पात जल जाते है, तब भी दूब जैसे की तैसे बनी रहती है।

आधुनिकता से सजे इस प्रगत विश्व में कृषी क्षेत्र में भी पुरी तरह बदलाव आ गया। भारत शतप्रतिशत कृषी प्रधान देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था का मूलस्रोत कृषी हैं। ऐसे हालात में किसान और खेती का असामान्य महत्व हमारें सामने आता है। किसान की प्रगती में ही देश की प्रगती छुपी हैं। किसान भाईयों तक नये तंत्रज्ञान की उपलब्धी सहजता से पहुँचाना ही तुलसी का सदैव प्रयास रहा है। आधुनिक तंत्र साहित्य के साथ-साथ ही हमारे किसान भाईयों तक आधुनिक कृषी विषयक विचार, तत्संबंधी वृत्त, लेख को पहुँचाने हेतु ही 'तुलसी पत्र' की संकल्पना जुडी हुई हैं। हमें पुरा विश्वास हैं कि किसानों तथा समाज के द्वारा 'तुलसी पत्र' का तहे दिलसें स्वागत किया जाएगा..! धन्यवाद.

"हमारा किसान"

हमारे देश की बने शान
सबका प्यारा बने किसान।
सबके लिये पैदा करे अनाज
फिर भी भूखा रहे किसान।
चाहे सुखा हो या बाढ़
अपने खुन का पानी कर
हरदम मेहनत करें किसान।
करे पुकार हर इन्सान
जय जवान.. जय किसान!

आधुनिक भारत का बदलता किसान

संजय तापडीया,
सीईओ

इस साल बारिश की शुरुआत धीमे हुई है, इससे थोड़ी बहुत संतुष्टता तो है। फिर भी बारिश के पानी पर १००% निर्भर रहने की हिम्मत करनेवाले किसानों में बहुत कमी आई है। अर्थात प्रकृति का जानलेवा बदलाव तो स्वयं पर आने का अनुभव २१ वी सदी की आहट लगने पूर्व से ही किसान ले रहा है। केवल २१ वी सदी की शुरूआत मुल तंत्रज्ञान के चमत्कारिक विश्वसनियता पर से होने से खेती व्यवसाय की ओर देखने के दृष्टिकोन में आमुलाग्र बदलाव हो रहा है। इसका मतलब किसान भी बदलने जा रहा है और उसे अब बदलने के अलावा दुसरा कोई उपाय नहीं है।

विश्व की तुलना में भारत की जनसंख्या १/६ है और इस्तेमाल करने लायक पानी की उपलब्धी १/२५ है। इस में ७० प्रतिशत पानी का क्षेत्र गंगा एवं ब्रम्हपुत्र इन नदियों ने व्यापा है। इस से उर्वरित भारत में खेती के लिए उपलब्ध पानी का अंदाजा आप ले सकते है। तंत्रज्ञान का प्रचार भारत में बहुत जल्द हो रहा है फिर भी अबतक कोई ६०-६५ प्रतिशत खेती पूरी तरह बारिश के पानी पर निर्भर होने का अफसोसजनक चित्र है। इस के बिना पानी इकठ्ठा अथवा सुखाना खेती के लिए उपयोग करने की मानसिकता बदकिस्मती से अभी तक चाहिए वैसी व्यापक नही हो पाई है। क्षेत्रफल के दृष्टी से देखा जाए तो एक मामुली सा ईस्त्राईल जैसा देश केवल तंत्रज्ञान से पानी व्यवस्थापन के जोर पर आज जगभर में एक समृध्द देश है ऐसा पहचाना जाता है। पानी के हर बुंद के इस्तेमाल की किमया इस्त्राईल ने कर दिखाई है। यह आदर्श भारत मे बहुत उपयोगी हो सकता है।

भारत में सद्यस्थिती में लगभग १८२० Cu./Capita/Year इतना पानी उपलब्ध है। जो कि १९५१ साल में २१७७ Cu./Capita/Year इतना और २०२५ में १३४१ तथा २०५० मे ११४० Cu./Capita/Year इतने कम प्रमाण मे उपलब्ध होगा। बढती जनसंख्या और दिनप्रतिदिन कम हो रही पानी की उपलब्धी के अनुसार इससे आगे बारीश के पानी पर निर्भर रहनेवाले किसान बंधुओ को उँचे तंत्रज्ञान का इस्तेमाल करने के अलावा पर्याय नही, यह मात्र सच है। साथ में वॉटर हार्वेस्टींग और पानी की ज्यादा से ज्यादा बचत इस बारें मे केवल शासन ने ही नही बल्कि किसान और सामान्य नागरिको ने भी सक्रीय होना जरुरी हो चुका है। आनेवाले कई सालों में अत्याधुनिक तंत्रज्ञान के बगैर खेती करना नामुमकिन होगा, ऐसा कहना गलत नही होगा, क्योंकि पानी का उपलब्ध स्त्रोत, उसमें सदा हो रही कमी, गुणवत्तापूर्ण उत्पादनों के मांग मे हो रही बढत और बदलते विश्व इनसे समन्वय साधना उनको ही मुमकिन है, जो तंत्रज्ञान के मित्र है। घाटे की खेती करना किसको भी लाभदायक नही है।

शेष पान २ पर...

कृषी घडामोडी

भारताच्या कृषि संशोधनास अमेरिकेचे सहकार्य- हिलरी

भारतातील उपासमार दूर करण्यासाठी, कृषि उत्पादन वाढविण्यासाठी अमेरिका भारताला सहकार्य करेल असे आश्वासन अमेरिकेच्या परराष्ट्रमंत्री हिलरी क्लिंटन यांनी दिले. हिलरी येथील भारतीय कृषि संशोधन संस्थेच्या भेटी दरम्यान बोलत होत्या. भारत अमेरिकेचे सहकार्य पाच महत्त्वाच्या आधारस्तंभावर आधारलेले असून त्यापैकी कृषि क्षेत्र प्रमुख आधारस्तंभ असेल. भारताची कृषि क्षेत्रातील भूमिका महत्वपूर्ण आहे. त्यांनी त्या क्षेत्रात घेतलेल्या पुढाकारास अमेरिकेचा पाठिंबा असेल. कमी पाण्यात जास्तीत जास्त उत्पादन देणाऱ्या बियाच्या निर्मितीसाठी अमेरिकाचे सहकार्य मिळेल.

'तुलसी' अमेरिकेतील डीआरटीएस तंत्रज्ञान देणार

डोरोन मामो

सुक्ष्म संशोधनामार्फत ठिबक सिंचन प्रणालीचे आधुनिक तंत्रज्ञान विकसित करणाऱ्या अमेरिकेतील 'ड्रिप रिसर्च टेक्नॉलॉजी सर्व्हिसेस' म्हणजेच 'डीआरटीएस' व तुलसी एक्स्ट्रुजन्स लि. यांच्यामध्ये अत्याधुनिक तंत्रज्ञानासंदर्भात महत्त्वाची चर्चा झाली. डीआरटीएस ही कंपनी तुलसीला ठिबक सिंचन प्रणालीसाठी अत्याधुनिक तंत्रज्ञान व भारतातील आर.आर.प्लास्ट लि. कंपनीबरोबर अत्याधुनिक एक्स्ट्रुजन्स शूटिंग मशिनरी असेंब्ली पुरविणार आहे, अशी माहिती डीआरटीएस कंपनीचे प्रेसिडेंट डोरोन मामो (अमेरिका) यांनी दिली. जगभरातील सुमारे २१ हून अधिक देशांमध्ये डीआरटीएसचे ड्रीप तंत्रज्ञान वापरले जाते. या तंत्रज्ञानामुळे भारतातील शेतकऱ्यांना पाणी, वेळ, वीज व पैसा या सर्व गोष्टींमध्ये मोठ्या प्रमाणावर बचत करता येऊ शकणार आहे. हायड्रोइनलाईन ड्रीप, पॉलिट्यूब ऑनलाईन ड्रीप या दोन प्रकारांमध्ये तुलसी ठिबक शेतकऱ्यांना अतिशय स्पर्धात्मक दरात उपलब्ध होत आहे. या तंत्रज्ञानाच्या फायदेशीर बाबी लक्षात घेता भारतात तुलसी ठिबक सिंचनाची डीआरटीएसची प्रणाली लवकरच लोकप्रिय होईल, असा विश्वास प्रदीप मुंदडा यांनी व्यक्त केला.

लोहयुक्त भात जातीवरील संशोधन पूर्ण

पॉलिश केलेल्या तांदळामध्ये सहापट अधिक लोह असलेली भाताची जनुकीय सुधारित जात स्वित्झर्लंडमध्ये विकसित झाली आहे. 'ईटीएच झुरिच' या संस्थेतील शास्त्रज्ञांचे हे संशोधन असून या संस्थेने यापूर्वी 'अ' जीवनसत्वाने समृद्ध असलेली 'गोल्डन राइस' ही भातजात विकसित केली आहे. ख्रिस्तोफ सॉटर आणि विलहेल्म ग्रिस्सेम या शास्त्रज्ञांच्या मार्गदर्शनाखाली हे संशोधन सुरु आहे.

संशोधनाचा उद्देश

जागतिक आरोग्य संघटनेच्या (डब्ल्यूएचओ) अहवालानुसार जगातील सुमारे दोन अब्ज लोकसंख्या लोहाच्या कमतरतेने त्रस्त आहे. लोहाची कमतरता असलेल्या लोकांना रक्तक्षय (ॲनिमिया) होण्याचा मोठा धोका असतो. त्यामुळे तांदूळच जर लोहाने समृद्ध झाले, तर ही समस्या दूर होऊ शकेल, या हेतूने हे संशोधन करण्यात आले आहे.

कोंबड्यांच्या पिसांपासून बायोडिझेल

कोंबड्यांची पिसे आणि अन्य अवशेष (चिकन फिदर मिल) यांचा उपयोग बायोडिझेलची निर्मिती करण्यासाठी होऊ शकतो, असे अमेरिकेत झालेल्या संशोधनात दिसून आले आहे. मानोमिश्रा, सुसांता मोहापात्रा, नरसिंहराव कोंडामुडी आणि जेसोन स्ट्रूल या शास्त्रज्ञांनी हे संशोधन केले आहे.

पोल्ट्री उद्योगामध्ये कोंबड्यांची पिसे आणि अन्य अवशेष राहतात, ते एकत्र करुन त्यावर उच्च तापमानाला प्रक्रिया करुन त्यापासून चिकन फीदर मिल तयार केले जाते. त्यामध्ये नत्राचे आणि प्रथिनांचे प्रमाण अधिक असते, त्यामुळे खत आणि पशुखाद्य म्हणून त्याचा वापर केला जातो, त्यामध्ये १२ टक्क्यांपर्यंत मेदयुक्त घटकांचे (फॅट्स) प्रमाणही आढळते, त्यामुळे त्याचा बायोडिझेल निर्मितीसाठी वापर करता येऊ शकतो, असे शास्त्रज्ञांनी म्हटले आहे.

बारा दिवस टिकणारा टोमॅटो विकसीत

शीतगृहात न ठेवताही किमान १० ते १२ दिवस ताजेपणा टिकण्याची क्षमता असलेली टोमॅटोची जात भारतीय कृषि संशोधन संस्थेतील (आयएआरआय) संशोधकांनी विकसीत केली आहे. भाजी पाला व फळे उत्पादनात भारताचा चीननंतर जगात दुसरा क्रमांक लागतो, मात्र केवळ उत्पादन अधिक चांगले असून चालत नाही. कारण दुरच्या वाहतुकीत माल पाठवताना कमी टिकवण क्षमतेचा माल खराब होऊन जातो. २५ ते ३० टक्के नुकसान या प्रकारे होते.

ही समस्या लक्षात घेऊन आयएआरआयच्या शास्त्रज्ञांनी उशिरा पक्व होणाऱ्या टोमॅटोची जैवतंत्रज्ञानावर आधारित जात विकसीत केली आहे. त्यामध्ये पोषणद्रव्येही अधिक असल्याचा त्यांचा दावा आहे. संस्थेच्या राष्ट्रीय वनस्पती जैवतंत्रज्ञान केंद्रातील रेण्वीय जीवशास्त्र विषयाचे शास्त्रज्ञ कैलाश बन्सल यांनी याबाबत माहिती दिली

आधुनिक भारत का बदलता किसान

पान १ से...

बारिश के पानी पर निर्भर रहने वाले इलाको में उत्पन्न का प्रमाण १.५ टन/प्रती हेक्टर है। ड्रिप अथवा स्प्रिंकलर इस जैसी आधुनिक सिंचन पध्दती से लिए जानेवाले उत्पन्न का प्रमाण ४ टन / प्रती हेक्टर इतना ज्यादा है एवंम ड्रिप और स्प्रिंकलर के इस्तेमाल से पानी की ६० से ७० प्रतिशत बचत होती है, मजुरी खर्च बच जाता है, उत्पादनों का दर्जा भी ऊँचा होता है। लेकिन किसान तथा भारत के लिए वरदान ठहराने वाले इस तंत्रज्ञान का प्रसार ज्यादा से ज्यादा किसानों तक होना यह समय की जरुरत है। इसलिए आनेवाले दिनों में कृषि उत्पादन निर्माण करने वाले कंपनीयों को हर एक तहसील से कम से कम एक गाँव दत्तक लेने का कदम उठाने से कोई आश्चर्य नही होगा। इस संकल्प के अनुसार कंपनी दत्तक गाँव के अल्पभूधारक किसान बंधुओं के खेत में ठिबक अथवा स्प्रिंकलर यंत्रणा लगायेंगी, उसके साथ ही बीज, बायोऑर्गनिक युरिया, आधुनिक तंत्रज्ञान का प्रशिक्षण तथा नई, जानकारी भी देंगी।

सरकारी अनुदान मिलने के लिए सहयोग करेगी और यंत्रणा बिठाने पर तीन साल बाद मतलब दो-तीन बार फसल हात में आने के बाद सारा खर्च संबंधित किसानों की ओर से स्वीकार किया जाएगा। इससे सामूहिक खेती संकल्पना का जनम हो सकता है। बाजारमूल्य ठहराने के लिए लगनेवाला नियंत्रण किसानों के हाथ में आ सकता है। आगे जोड़धंदा, शैक्षणिक उपक्रम इनको भी गति मिल सकेगी। बचत गटो के माध्यम से कृषि संशोधन प्रयोगशाला बनने से सामाजिक प्रगति का और सकारात्मक बदलाव का वेग अभूतपूर्व बढेगा। यही अपने देश को महासत्ता बनने की दिशा में सफर का बढता कदम होगा। आनेवाले कई सालों मे उँचे तंत्रज्ञानयुक्त कृषी प्रधान देश, ऐसी भारत की पहचान विश्वभर में निर्माण होने पर हम सबके लिए बहुत अभिमान की बात होगी । बदलते भारतका बदलता किसान यह सपना सच में साकार हो सकेगा, इसमें अतिशयोक्ति नहीं है।

■■■

तुलसी और समाज
एक अतुट नाता...

तुलसी एस्ट्रुजन्स लि. पाईप उद्योग जगत में सुप्रसिध्द एवं बहुत लोकप्रिय कंपनी है। किसानो के जीवन में सुख समृध्दि लाते हुए, उनको जीवन में सफलता दिलाने में तुलसी ने महत्वपुर्ण योगदान दिया है। तुलसीने कृषी उत्पादकों के साथ-साथ सामाजिक कार्य में भी योगदान दिया है।

तुलसी एस्ट्रुजन्स परिवार व्दारा जलगाव शहर में श्रीमद् भागवत कथाज्ञान यज्ञ का आयोजन १४-२३ जनवरी ०९ में रिंगरोड के महेश प्रगती मंडल के सभागृह मे किया गया। श्रीमद् भागवत कथाज्ञान यज्ञ हर दिन सुबह ९.३०- दोपहर १.०० और दोपहर में ३.३० - सायं ७.०० तक लिया गया। इन दस दिन के भव्य अध्यात्मिक कार्यक्रम में अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। यहाँ प. पू. श्री. विश्वनाथ भाईजी कश्यप (राजू भैय्या) उज्जैनकर इन्होंने कथा का पठन किया । स्वदेशी के आंदोलनकारी राजीव दिक्षित ,इन्होंने भी इस कार्यक्रम के दरम्यान जीवन और आयुर्वेद इस विषय पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में परिसर के लोगों ने बड़ी संख्या में उपस्थित रहकर अच्छा प्रतिसाद दिया। कार्यक्रम में उपस्थित जनों से राजीव दिक्षित ने संवाद किया। इस तरह के कई सामाजिक कार्यक्रम भी तुलसी परिवार से आयोजित किये जाते है।

तुलसी परिवार ने जलगांव शहर मे स्व. महेंद्रकुमार झुंबरलाल सुराणा इनके स्मृति प्रित्यर्थ इ.स. १९८७ को प्रख्यात अभिनेता राज कपुर के हाथों उद्घाटित हुई प्याऊ (पानपोई) जो किसी कारणवश १५ साल से बंद अवस्था में थी, इस सकल प्रकल्प को मूर्तरुप में लाकर तुलसी परिवार के प्रयासों से पुनश्च चालू किया गया । प्रति घंटा हजार लिटर जल ठंडा और शुध्द करने की क्षमता रखने वाला यह प्याऊ मुख्य सड़क पर होने के कारण दिनभर हजारों लोगो की प्यास बुझाता है।

तुलसी परिवार और रोटरी क्लब ऑफ जलगाँव वेस्ट के द्वारा १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिन निमित्त स्वातंत्र्य रथ का आयोजन किया जाता है। तुलसी परिवार का उद्देश्य यही है कि किसी भी रूप में समाज प्रबोधन किया जाए। इस अवसर पर देशभक्ती पर गीत सुनाए जाते है और अन्य समाज प्रबोधनात्मक कार्यक्रम लिए जाते है।

तुलसी परिवार की ओर से 'रक्तदान शिबिर' लिये जाते है। तुलसी परिवार की इस सेवा से कई जरूरतमंद बिमारों को फायदा हुआ है।

इस सामाजिक कार्य के साथसाथ तुलसी परिवार ने छात्रों के हित मे भी हमेशा कार्य किया है। गरीब छात्रों को किताबे, स्कुल युनिफॉर्म आदि साहित्य देकर मदद की है। इससे अन्य छात्रों की तरह उन्हें भी मान-सन्मान से ज्ञान हासिल हो सकें, यह बात ध्यान में रखकर गरीब छात्रों को शिक्षण लेने के लिए उत्साहित किया है।

इसी के साथ साथ प्रदूषण की जानलेवा समस्या पर तुलसी परिवार की ओर सें कई सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन किया हैं। इस तरह के कई सामाजिक उपक्रम कर के समाज और विश्व को प्रदूषण से मुक्ती दिलाने की कोशिश की है।

आयपीओ के बाद तुलसी का नाम पूरे देश में हुआ है, इस में कोई शक नहीं। यकीनन आयपीओ की बड़ी सफलता तुलसी परिवार के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में लिखी जायेगी।

तुलसी का स्थान भारतीय धर्म-संस्कृति में पवित्र और महत्त्वपूर्ण है। घर-आँगन में तुलसी का होना घर की शोभा, घर के संस्कार, पवित्रता तथा धार्मिकता का अनिवार्य प्रतीक है।

तंत्रज्ञान आणि तुलसी

प्रदीप मुंदडा
एम.डी.

तुलसी ठिबकचे फायदे-

- ७०% पाण्याची बचत.
- पिकाच्या वाढीस उपयुक्त घटक दिवसा आड देता येतात.
- जमिनीत सदैव ओलावा राखते त्यामुळे माती मऊ राहते.
- पाण्यात विरघळणारे औषधी किंवा खते या ठिबक तंत्राद्वारे देता येतात.
- कंपनीकडून उत्कृष्ट व जलद सेवा.
- कमी दाबात ही प्रणाली कार्यरत होते.
- आधुनिक तंत्रज्ञान युक्त.

आधुनिक प्रगत युगात शेती तंत्रज्ञानात प्रचंड प्रगती झालेली आहे. त्यामुळे शेती व्यवसायाला सुद्धा आधुनिकतेची झालर लागलेली आहे. पूर्वीच्या काळी शेती व्यवसाय करतांना पारंपारीक साधनांशिवाय पर्याय नव्हता. मात्र त्यासाठी वेळेचा खूपच अपवाद व्हायचा. त्यामुळे त्यातूनही शेतकऱ्यास नुकसान सोसावे लागायचे.

म्हणूनच नवीन प्रगत तंत्रज्ञानाने शेती व्यवसायास नवसंजीवनी दिली आहे असं म्हणाल्यास वावगे ठरु नये. प्रगत कृषी तंत्रज्ञान क्षेत्रातील नामवंत कंपन्यांमध्ये 'तुलसी एक्स्ट्रुजन्स'चे नाव निश्चितपणे आघाडीवर आहे. अद्ययावत तंत्रज्ञानयुक्त तुलसी पाईप, तुलसी स्प्रिंकलर, तुलसी ठिबक ला कृषि क्षेत्रात सर्वत्र प्रचंड मागणी आहे.

शेतकऱ्यांच्या समृद्धतेसाठी, सर्वांगिण विकासासाठी वचनबद्ध असलेला तुलसी एक्स्ट्रुजन्स लि. चे 'Let's Nurture The Green Era' हे ब्रीद वाक्य आपल्या ध्येयवादाचे प्रकटीकरण करते. सतत नवनवीन तंत्रज्ञान कृषिक्षेत्रास उपलब्ध करुन देणे या एकमेव ध्यासातूनच कंपनीने बळीराजाच्या हृदयात प्रेमाचे स्थान मिळविले आहे. विशेष म्हणजे तीव्र पाणी टंचाई, दिवसेंदिवस वाढते लोडशेडिंग, महागाई या अत्यंत प्रतिकुल पार्श्वभूमीवर तुलसीच्या प्रगत तंत्रज्ञानाच्या शेतकऱ्यास खूपच फायदा होतो. वाढत्या लोकसंख्येचा सर्वाधिक फटका शेतीव्यवसायाला बसत आहे. याला कारण असे की पूर्वी कमी लोकसंख्येमुळे पावसाच्या पाण्याच्या साठा बहुतांशपणे शेतीसाठी वापरला जायचा. मोठमोठी धरणे देखिल खास शेतीसाठी आरक्षित असायची. त्यावेळी जमिनीत पाण्याची पातळी देखील बऱ्यापैकी वर असायची. मात्र जसजशी लोकसंख्या वाढू लागली तसतसा पाण्याचा वापर प्रचंड प्रमाणात पिण्यासाठी होऊ लागला. याचा परिणाम म्हणजे शेतीला उपलब्ध पाण्याचा साठा सातत्याने कमी होत गेला. त्यात भरीस भर म्हणजे पावसाचा लहरीपणा, लोडशेडिंग यामुळे तर शेतकऱ्याची त्रस्तता अधिकच वाढत आहे. या समस्येवर शेतकऱ्यास सहाय्यभूत म्हणून तुलसीचे अत्याधुनिक तंत्रयुक्त तुलसी ठिबकचे प्रगत तंत्र उपलब्ध करुन दिले. तुलसी ठिबक तंत्रामुळे कमी पाण्यात भरघोस उत्पन्नाची हमी मिळते.

तुलसी हायड्रो ड्रिप सिंचन प्रणालीला सरकारी अनुदान देखील उपलब्ध आहे. तुलसी स्प्रिंकलर प्रणाली देखिल अत्यंत उपयुक्त नि गुणवत्तापूर्ण आहे. कमी पाण्यात जास्त जमिन सिंचनाखाली आणणे या प्रणालीमुळे सहज शक्य होते. पाण्याच्या फवाऱ्यामुळे पिकावरील किड धुवून निघते. पिकास ओलसर हवा मिळते यासह अनेक उपयुक्त गुणधर्म तुलसी स्प्रिंकलर प्रणालीचे आहे. तुलसी प्लंबिंग पाईप शेतीसाठी त्याच प्रमाणे घरासाठी अत्यंत उपयुक्त आहे. अशा प्रकारे तुलसीचा समाजापर्यंत प्रगत तंत्रज्ञान पोहचविण्याचा सदैव प्रयत्न असतो.

मैं किसान बोल रहा हूँ..

भारत कृषीप्रधान देश है, भारत की बहुसंख्य जनताओं का व्यवसाय खेती है। इस समय किसान निराश होता है, इस समय भारत में २५ प्रतिशत बारिश कम है। महाराष्ट्र मे इससे भी गंभीर गत बन चुकी है।

खेती की उन्नति के लिए कृषी विभाग की तरफ से बहुमोल मार्गदर्शन मिलता है, कृषि विद्यापीठ स्तर से भी कृषी दिंडी का आयोजन किया जाता है। इस तरह किसानों को कृषी संबंधी अच्छा मार्गदर्शन मिलता है। फिर भी किसानों को कई समस्याओं से हमेशा झगड़ना पड़ता है। कभी रासायनिक कंपोस्ट की कमी हो जाती है, तो सरकार से माँग करनी पड़ती है। लेकिन माँग करने पर भी वह समस्याओं का हल नहीं होता। सरकार हमेशा देरी से निर्णय लेती है। इससे किसानों की थोड़ी बहुत जरुरते निश्चित रुप से पूरी हो जाती है। लेकिन किसान सरकार से बहुत नाराज है। कर्ज माफी योजना निश्चित रुप से फायदे के लिये बनाई गई है। फिर भी सरकार से किसान नाराज ही है, क्योंकि आपत्तग्रस्त और ऋणग्रस्त किसान कुछ कारणों से उपेक्षित रहे हैं। उन्हे कर्जमाफी योजना का कुछ भी फायदा नहीं मिल सका।

किसानों को फसल संबंधी बहुत समस्याओं का सामना करना पडता है। जैसे कपास पर पड़ने वाला लाल्या रोग है, वैसे ही अन्य फसलों पर कई तरह के रोगों का प्रभाव होता है ,या किटको का हमला इन समस्याओं पर किसानो को योग्य मार्गदर्शन की बहुत आवश्यकता होती है, उस समय किसानों को कोई जानकारी या मार्गदर्शन नहीं मिल पाती, इस कारण भी किसान निराश हो जाते है । किसानों के लिए चलाया उपक्रम किसान कॉल सेंटर आज नाममात्र रहा है, इसका किसानो को पूरी तरह लाभ नहीं होता क्योंकि उस जगह यंत्रसामग्री की कमी रहती है।

भारत कृषी प्रधान देश है, भारत की उन्नति के लिए खेती यह केंद्रबिंदू है।लेकिन फिर भी किसानों की ओर सरकार का पूरी तरह से ध्यान नहीं है। इस तरह किसान की सदा उपेक्षा ही हो रही है।

पाणी व्यवस्थापन, नियोजन व तुलसी

आज सर्वदूर अपुऱ्या पावसामुळे पाण्यासाठी शेतकऱ्यांना आपले पिक जगविणे कठीण होऊन बसले असून सर्वसामान्य जनतेलासुद्धा धरणातील अल्पसाठ्यामुळे पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न सुद्धा गंभीर होत चालला असून पाण्याचे व्यवस्थापन हा एक उपाय या सर्व परिस्थितीवर होऊ शकतो. आपल्याकडे दरवर्षी कमी अधिक प्रमाणात पाऊस अशी परिस्थिती नेहमी उद्भवत असते. त्यामुळे आपण जेवढा पाऊस पडतो त्याचे योग्य प्रकारे व्यवस्थापन करुन त्या पाण्याला योग्य प्रकारे साठवून ठेवले पाहिजे. यात पाणी आडवा पाणी जिरवा तसेच शेतात शेततळे करुन आपल्या या पाण्याचे साठे वाढवू शकतो. वरील बाबींवरुन आपणा सर्वांना हे लक्षात आलेच असेल की, या सर्व परिस्थितीचा विचार करता भविष्यात यापेक्षा भयंकर स्थितीला सामोरे जाण्याची वेळ आपल्यावर न येण्यासाठी आपण आजच जागरुक होऊन पाण्याचे व्यवस्थापन करुन आपल्या सर्वांचे जीवन सुखमय करुया. पाण्याचे व्यवस्थापन जसे महत्त्वाचे आहे तसेच पाण्याचे नियोजन हे सुद्धा तेवढेच महत्त्वाचे आहे.यापेक्षा महत्त्वाची बाब कोणती आहे? आज अपुऱ्या पावसामुळे धरणातील पाणीसाठा हा केवळ पिण्याच्या पाण्यासाठी शासन राखीव ठेवण्याचा निर्णय घेते. पण याच पिण्याच्या पाण्याचे नियोजन जे ग्रामपंचायत, नगरपालिका, महानगरपालिका यांच्या मार्फत केले जाते. हे करतांना काही भागात कमी वेळ अथवा कमी दाबाचा पाणी पुरवठा तर काही विशिष्ट भागात जास्त वेळ पाणी अशामुळे काही भागात लोकांना पाणी अगदी मोजून मापून वापरावे लागते तर काही भागात सर्रास पाण्याचा वापर मोठ्या प्रमाणात होतो यामुळे असे वाटते की पाणी टंचाई आहे की नाही? यासाठी प्रत्येक नागरिकाने या बाबी लक्षात घेऊन पाण्याचे योग्य नियोजन करुन जलसाठा कशा प्रकारे वाचेल यासाठी प्रयत्न करायला हवा. पाईप उद्योग जगतात सुप्रसिद्ध असलेल्या तुलसी एक्स्ट्रुजन्स लि. या सर्व परिस्थितीचा विचार करुन नेहमीच सकारात्मक बदल घडवत आहे व नवनवीन उपकरणांनी शेतकऱ्यांना कशा प्रकारे अपुऱ्या पाण्याचे योग्य व्यवस्थापन व योग्य नियोजन करुन आपले भरघोस पिक घेता येईल याबाबत सतत संशोधन, परिश्रम घेत आहे. बदलत्या वातावरणामुळे पाण्याची उपलब्धता दिवसेंदिवस कमी होत आहे. त्याकरिता कमीतकमी पाण्यात शेतीचा जास्तीत जास्त भाग सिंचनाखाली आणने काळाची गरज झाली आहे. यासाठी तुलसी एक्स्ट्रुजन्स लि. ही कंपनी स्प्रिंकलर, ड्रीप, एचडीपी या अत्याधुनिक कृषी उत्पादनांचे निर्मिती करीत आहे. शेतकऱ्यांच्या जीवनात सुख, समृद्धी फुलविण्याच्या दृष्टिकोनातून तुलसी एक्स्ट्रुजन्सने अत्याधुनिक गुणवत्तापूर्ण कृषी उत्पादनांच्या निर्मितीमध्ये नवनवीन तंत्रज्ञानाचा समावेश करुन समस्या दूर करण्याचे काम केले असून शेतकऱ्यांनी या उपकरणांचा वापर करुन समृद्ध व्हावे.

This magazine is for private circulation only. It has been designed, composed at multi media features pvt ltd. Jalgaon, printed at Trimurti offset Jalgaon & published at Tulsi Extrusions Ltd.